THE ENGLISH AND FOREIGN LANGUAGES UNIVERSITY, HYDERABAD

B.A. (Hons./Research) Hindi SEMESTER - I : COURSE DESCRIPTION

August to December - 2025

Course title	**हिंदी साहित्य का इतिहास- प्राचीन काल से भक्ति काल तक** History of Hindi Literature (From Ancient to Bhakti Kaal)
Category (Mention the appropriate category (a/b/c) in the course description.)	a. Existing course without changes
Course code	PAPER : BAHINC - 101
Semester	I
Number of credits	04
Maximum intake	20 (on first-come-first-served-basis for **BA courses only**)
Day/Time	Thursday 9:00 am to 11:00 am & Wednesday 11:00 am to 1:00 pm
Name of the teacher/s	Prof. Shyamrao Rathod
Course description	**Include the following in the course description** i) इस प्रश्नपत्र में साहित्य के कालों के नामकरण, विभाजन सीमाकंत, प्रवृतियाँ और युगीन परिस्थितियों और साहित्यिक विश्लेषणों के आधार पर छात्रों में साहित्य विवेक के साथ ही इतिहास विवेक की महत्ता को आधार प्रदान करना है। **ii) उद्देश्य :** ■ भाषा, साहित्य एवं इतिहास के अर्तसंबंधों पर विद्यार्थी की योग्यता को विकसित करना। ■ हिंदी साहित्य का इतिहास के महत्व एवं काल विभाजन की जानकारी प्राप्त होगी। ■ हिंदी साहित्य की परंम्परा, इतिहास और प्रतिनिधि कवियों से परिचित कराना। ■ छात्रों में साहित्येतिहास की समझ को विकसित करना है। **पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम) :** ■ इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से हिन्दी भाषा के उद्भव की प्रारम्भिक अवस्थाओं / स्थितियों के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के स्वरूप का परिचय मिलेगा। ■ भारतीय साहित्य की परम्पराओं से हिन्दी साहित्य को विरासत के रूप में साहित्य और संस्कृति की कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ प्राप्त हुई, इसकी जानकारी प्राप्त होगी। ■ इस काल खण्ड में आदिकालीन, भक्तिकाल तथा रीतिकाल के साथ-साथ परिवेशगत विशेषताओं के फल स्वरूप जिस गंगा-जमुनी भारतीय संस्कृति का प्रार्दुभाव हुआ, उसका ज्ञान विद्यार्थियों को व्यावहारिक रूप से साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से होगा। **iii) Learning Outcomes :** a) डोमेन स्पेसिफिक आउटकम्स (Domain Specific Outcomes) & b) वैल्यू एडिशन (Value Addition) • हिन्दी साहितय के आदिकाल से भक्तिकाल तक की विशेषताओं को समझना। • आदिकाल से भक्तिकाल के प्रमुख प्रवृत्तियों एवं परिस्थितियों को जानना। • इस काल के प्रमुख कवियों एवं उनके रचनात्मक योगदान से परिचित होना। • आदिकाल से भक्तिकाल तक के साहित्यिक विकास यात्रा को व्यवस्थित रूप से समझना। • साहित्येतिहास की समझ विकसित करना। • आदिकाल, भक्तिकाल की परंपरा, इतिहास और प्रतिनिधि कवियों को पूर्णतः समझने में सक्षम होगे।

	इकाई-1:- ▪ हिन्दी साहित्य का आदिकाल, नामकरण, प्रवृत्तियाँ और प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ। **इकाई-2:-** ▪ भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियाँ, संत एवं सूफी काव्यधारा की सामान्य विशेषताएँ, प्रमुख भक्तिकालीन संत एवं सूफी कवियों के प्रमुख ग्रंथ और उनका योगदान। **इकाई-3**:- ▪ रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियाँ, रीतिकालीन काव्यधाराएँ प्रमुख कवि, उनके काव्य ग्रंथ और उनका योगदान।
Course delivery	Lecture/Seminar/Experiential learning ▪ आदिकाल पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियाँ। ▪ भक्तिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियाँ।
Evaluation scheme	Internal (modes of evaluation): 40 % [Assignment (20), {Presentation (10), Class test (10) and Viva (10)} best of Two] End-semester (mode of evaluation): 60% Final Exam
Reading list	**Essential reading :** ● शुक्ल रामचन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2019 ● द्विवेदी हजारी प्रसाद : हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, मुम्बई 1940 **Additional reading :** ● डॉ. नगेन्द्र : (संपा), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976 ● भटनागर डॉ रामरतन : प्राचीन हिन्दी काव्य, इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग1952 ● त्रिपाठी डॉ.विश्वनाथ : हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास, ओरिएण्ट ब्लैक स्वान पब्लिकेशन, नई दिल्ली

Course title	**आदिकालीन एवं निर्गुण हिन्दी काव्य** **ANCIENT AND NIRGUNA HINDI POETRY**
Category (Mention the appropriate category (a/b/c) in the course description.)	b. Existing course without changes
Course code	PAPER : BAHINC - 105
Semester	I
Number of credits	04
Maximum intake	20 (on first-come-first-served-basis **for BA courses only**)
Day/Time	Tuesday 09:00 am to 11:00 am, Monday 11:00 am to 01:00 pm
Name of the teacher/s	Dr. Pankaj Singh Yadav(GF)
Course description	**Include the following in the course description** **i)** छात्र का आदिकालिन एवं भक्तिकालिन, निर्गुण हिंदी काव्यगत संवेदना, उनकी सृजन भूमि एवं भाषा वैशिष्ट्य से परिचित करना। **ii) उद्देश्य :** ● विद्यार्थियों में आदिकालिन एवं भक्तिकालिन निर्गुण हिंदी काव्य दृष्टि को विकसित करना। ● आदिकालिन एवं भक्तिकालिन निर्गुण काव्य के कवियों का अध्ययन एवं उनकी कविताओं तथा युग बोध की समझ विकसित होगी।

	• पाठ्य कृतियों के संदर्भ में काव्य एवं लोक भाषा के आस्वादन और समीक्षा की क्षमता को बढ़ाना। • भक्ति कविता के अखिल भारतीय स्वरूप से परिचय कराकर राष्ट्रीय बोध विकसित करना। **पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम) :** • हिंदी साहित्य के आदिकालीन एवं भक्तिकालीन साहित्य से अवगत कराना। • निर्गुण भक्ति काव्य के अंतर्गत - संत काव्य के प्रमुख कवियों कबीर,जायसी आदि का अध्ययन करना। • भक्ति काल हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग है। इसके अध्ययन से मानवीय और नैतिक मूल्यों का विकास होगा। **iii) Learning Outcomes:** a) डोमेन स्पेसिफिक आउटकम्स (Domain Specific Outcomes) & b) वैल्यू एडिशन (Value Addition) • आदिकालिन एवं भक्तिकालिन निर्गुण हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों सामाजिक परिस्थितियों तथा भाषिक वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे। • आदिकालिन एवं भक्तिकालिन निर्गुण हिंदी काव्य बोध की दिशा और प्रवृत्तियों की समझ को विकसित कर सकेंगे। • आदिकालिन एवं भक्तिकालिन निर्गुण हिंदी काव्य की संवेदना, संदेश एवं समीक्षा की क्षमता को बढ़ा पाऐंगे। • आदिकालिन एवं भक्तिकालिन निर्गुण हिंदी काव्य के माध्यम से ऐतिहासिक पक्ष को समझ पाऐंगे। **इकाई-1:-** • सरहपा • पृथ्वीराज रासो - कयमास वध • विद्यापति **इकाई-2 :-** • कबीरदास • मलिक मुहम्मद जायसी • रैदास **इकाई-3** :- चयनित कविताएँ का व्याख्या एवं विश्लेषण • सरहपा (हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, डॉ. नामवर सिंह) पुस्तक में संकलित सरहपा के प्रारंभ के पाँच पद। • पृथ्वीराज रासो का कयमास वध (सं. हजारीप्रसाद द्विवेदी और नामवर सिंह), प्रारंभ के 10 छंद • रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा संपादित पुस्तक, 'विद्यापति पदावली' से कुल पाँच पद। • पद सं. 2, 3, 10, 11, 263 • श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित 'कबीर ग्रंथावली' से कुल 10 पद (बिरह कौ अंग और गुरुदेव कौ अंग) से। • 'बिरह कौ अंग' से पद सं. 1,7,8,13,45 • 'गुरुदेव कौ अंग' से पद सं. 2,4,11,14,33 • जायसी ग्रंथावली, सं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संपादित पुस्तक से ('नागमति वियोग खण्ड' के प्रारंभ के पाँच कडवक।

	• बिहारी: जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' द्वारा संपादित 'बिहारी-सतसई' से कुल पाँच पद। • घनानंद: विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा संपादित पुस्तक 'घनानंद कवित्त' से कुल पाँच पद।
Course delivery	Lecture/Seminar/Experiential learning: • सरहपा (हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, डॉ. नामवर सिंह) पुस्तक में संकलित सरहपा के प्रारंभ के पाँच पद। • पृथ्वीराज रासो का कयमास वध (सं. हजारीप्रसाद द्विवेदी और नामवर सिंह), प्रारंभ के 10 छंद। • चयनित कविताएँ का व्याख्या एवं विश्लेषण।
Evaluation scheme	Internal (modes of evaluation): 40 % [Assignment (20), {Presentation (10), Class test (10) and Viva (10)} best of Two] End-semester (mode of evaluation): 60% Final Exam
Reading list	**Essential reading** 1. द्विवेदी हजारी प्रसाद, कबीर, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, मुम्बई 1946। 2. पाठक शिवसहाय मलिक, मुहम्मद जायसी और हिन्दी काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद। **Additional reading: संदर्भ ग्रंथ** 3. त्रिपाठी रामनरेश, तुलसी और उनकी कविता (भाग-1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग 1937। 4. बाजपेयी, नन्ददुलारे, सूर संदर्भ, इण्डियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

Course title	**हिंदी कहानी** **HINDI FICTION**
Category (Mention the appropriate category (a/b/c) in the course description.)	c. Existing course with revision. Mention the percentage of revision and highlight the changes made. 50%
Course code	PAPER : BAHINC - 110
Semester	I
Number of credits	04
Maximum intake	20 (on first-come-first-served-basis **for BA courses only**)
Day/Time	Monday 09:00 am to 11.00 am & Thursday 11.00 am to 01.00 pm
Name of the teacher/s	Dr. Priyadarshini
Course description	**Include the following in the course description:** i) हिंदी भाषा एवं संस्कृति के माध्यम से कहानियों के द्वारा परिवर्तनकारी यात्रा से अवगत कराना है। **ii) उद्देश्य:** • कथा सृष्टि के स्वरूप के समझ विकसित करना। • विद्यार्थी रचनात्मक और कथा आस्वादन से परिचित कराना। • कहानी के तत्व, स्वरूप एवं विकास को समझ पाएंगे। • कहानी के ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना। **पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम) :** • कहानी साहित्य की आधुनिक और लघु विधा है पर अपने आप में यह बहुत ही सशक्त और प्रभावशाली है, इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि 'कहानी छोटे मुँह बड़ी बात' करती है। • लघु रूप में कहानी मानव जीवन के दुःख, सुख, संघर्ष, आशा, निराशा, उतार चढ़ाव, मूल्य-अवमूल्यन की प्रक्रियाएँ, भविष्य की चिन्ताओं और उनके समाधान आदि की व्यापक दृष्टियों को समेटे रहती है।

	• इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से मानव जीवन और समाज से जुड़े उपर्युक्त सभी पक्षों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होगा। **iii) Learning Outcomes :** a) डोमेन स्पेसिफिक आउटकम्स (Domain Specific Outcomes) & b) वैल्यू एडिशन (Value Addition) & c) स्किल एनहांसमेंट (Skill Enhancement) • इस प्रश्नपत्र से कथा साहित्य की समझ को विकसित करना। • हिंदी कहानी विधा के तात्विक स्वरूप से परिचित हो पायेगे। • कथा साहित्य के ऐतिहासिक विकास क्रम महत्व एवं मूल्याकांन करने की क्षमता को विकसित कर पायेंगे। • चयनित कहानियों के माध्यम से सामाजिक चिंतन की समझ बढ़ेगी। • कहानियों के माध्यम से लैंगिक असमानता मानवीय मूल्य सामाजिक भेदभाव के प्रति जागरूक होगें। • व्यावसायिक परिप्रक्ष्य में कहानियों की भूमिका को समझ सकेंगे। • विद्यार्थी कथा लेखन, पटकथा लेखन का कैशल, संवाद योजना इत्यादि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे। **इकाई-1** • हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास • प्रेमचंद पूर्व कहानी • प्रेमचंदोत्तर कहानी • समकालीन कहानी **इकाई- 2 :-** चयनित कहानियों की व्याख्या एवं विश्लेषण • चयनित कहानियाँ : • सवा सेर गेंहूँ - प्रेमचंद • पुरस्कार - जयशंकर प्रसाद • फूलो का कुर्ता - यशपाल • चीफ़ की दावत - भीष्म साहनी • मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम - फणीश्वरनाथ 'रेणु' • मांस का दरिया - कमलेश्वर • वापसी - उषा प्रियम्वदा • पिता - ज्ञानरंजन
Course delivery	Lecture/Seminar/Experiential learning : • हिन्दी कहानी का उद्भव एवं विकास • चयनित कहानियों की व्याख्या एवं विश्लेषण
Evaluation scheme	Internal (modes of evaluation): 40 % [Assignment (20), {Presentation (10), Class test (10) and Viva (10)} best of Two] End-semester (mode of evaluation): 60% Final Exam
Reading list	**Essential reading : संदर्भ ग्रंथ**

	● राय गोपाल : हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2014 ● मधुरेश : हिन्दी कहानी का विकास, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली. 2014 **Additional reading : संदर्भ ग्रंथ** ● तिवारी रामचन्द : हिन्दी का गद्य साहित्य, लोक भारती प्रयागराज, 2019 ● चतुर्वेदी रामस्वरूप : गद्य विन्यास और विकास, लोक भारती प्रयागराज, 2018 ● प्रेमचंद : मानसरोवर .... ● सिंह बच्चन : प्रतिनिधि कहानियाँ

Course title	**हिंदी भाषा और साहित्य: रचनात्मक लेखन** **HINDI LANGUAGE AND LITERATURE: CREATIVE WRITING**
Category (Mention the appropriate category (a/b/c) in the course description.)	d. Existing course with revision. Mention the percentage of revision and highlight the changes made. 50%
Course code	PAPER : MAHINC 115
Semester	I
Number of credits	03
Maximum intake	20 (on first-come-first-served-basis **for MA courses only**)
Day/Time	Wednesday 09.00 am to11.00 am, Tuesday 11.00 am to 1.00 pm
Name of the teacher/s	Dr. Promila
Course description	**Include the following in the course description:** i) छात्र इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हिंदी भाषा एवं साहित्य में सृजनात्मक लेखन की ओर अपनी क्षमताओं को विकसित कर पायेगा। **ii) उद्देश्य :** ● सृजनात्मक चिंतन और लेखन क्षमता का विकास हो सकेगा । ● लेखन और मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा विद्यार्थियों में प्रभावी क्षमता विकसित हो सकेगी । ● विद्यार्थी अपने परिवेश, समाज तथा राष्ट्र के प्रति संवेदनशीलता का विकास कर पाएगा । ● सृजनात्मक लेखन विद्यार्थियों को अपने विचारों को व्यवस्थित और अभिव्यक्त करने में मदद करता है।सृजनात्मक लेखन विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति को बढ़ावा देता है। ● सृजनात्मक लेखन विद्यार्थियों को आत्मभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर अकादमिक लेखन में भी सुधार करने में मदद करता है। **पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम) :** ● सृजनात्मक और भाषायी कौशल का परिचय कराना, विचारों का प्रभावी प्रस्तुतिकरण का विकास होगा। ● सृजनात्मक चिंतन और लेखन क्षमता को विकसित कर मीडिया लेखन की समझ विकसित करना। ● सृजनात्मक लेखन विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के व्याकरण, शब्दावली और शैली से परिचित कराता है। सृजनात्मक लेखन विद्यार्थियों को साहित्यिक ज्ञान में वृद्धि में मदद करता है। ● आत्मविश्वास में वृद्धि के साथ – साथ विद्यार्थी अपनी भाषिक और साहित्यिक क्षमताओं को विकसित करेंगे।

	iii) Learning Outcomes : c) स्किल एनहांसमेंट (Skill Enhancement) & d) एम्प्लॉयबिलिटी क्वोशिएंट (Employability Quotient) ● वर्तमान समय डिजिटल युग है। ● ये पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभदायक है। ● रोजगार के असीम संभावनाएँ इस पाठ्यक्रम के माध्यम से बनती है। ● सृजनात्मक लेखन से छात्रों में भाषाई दक्षता एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन मिलेगा। ● रोजगार के सभी क्षेत्रों में व्यक्तित्व निर्माण में सृजनात्मक लेख महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। **इकाई-1** ● सृजनात्मक लेखन: अर्थ, स्वरूप और बोध ● सृजनात्मक लेखन और परिवेश संदर्भ ● सृजनात्मक लेखन और व्यक्तित्व निर्माण **इकाई - II** ● सृजनात्मक लेखन: भाषिक संदर्भ ● भाव और विचार का भाषा में रूपान्तरण ● साहित्यिक भाषा की विभिन्न छवियाँ ● प्रिंट तथा इलेक्ट्रोनिक माध्यमों की भाषा का अंतर **इकाई - III** ● सृजनात्मक लेखन – विविध आयाम ● कविता, गीत, लघु कथा ● हास्य - व्यंग्य लेखन
Course delivery	Lecture/Seminar/Experiential learning: ● सृजनात्मक लेखन: अर्थ, स्वरूप और बोध। ● सृजनात्मक लेखन: भाषिक संदर्भ ● सृजनात्मक लेखन – विविध आयाम
Evaluation scheme	Internal (modes of evaluation): 40 % [Assignment (20), {Presentation (10), Class test (10) and Viva (10)} best of Two] End-semester (mode of evaluation): 60% Final Exam
Reading list	**Essential reading : संदर्भ ग्रंथ** ● मिश्र रामचंद्र : शैली ● गौतम रमेश : सं. रचनात्मक लेखन ● श्रीवास्तव रवींद्रनाथ : सृजनात्मक साहित्य ● पल्लवन, संक्षेपण, अनुच्छेद **Additional reading : संदर्भ ग्रंथ**